आय और सम्पत्ति

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १५ सम्पादक : किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक : मगनभाओी देसाओी अंक १२

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १९ मओी, १९५१

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

ठक्कर बापा स्मारककी अपील

अिसी अंकमें दूसरी जगह ठक्कर बापा स्मारक निधिके लिअे श्री मावलंकर, श्री पुरुषोत्तमदास टंडन तथा दूसरे नेताओंकी सहीसे अेक अपील प्रकाशित हो रही है। अुसकी ओर मैं पाठकोंका ध्यान खींचता हूं। पाठक देखेंगे कि प्रिय नेताओंकी मृत्युके बाद अुनकी यादमें साधारणतः जैसे स्मारककी योजना होती है, और अुसके लिअे जैसी अपील की जाती है, अुससे यह भिन्न है। अिसकी विशेषताअें ये हैं:

(१) अिसमें अैसा निर्देश नहीं किया गया है कि हमें अितने लाख या करोड़ रुपये अिकट्ठे करने हैं। लेकिन अिसमें लोगोंकी अेक संख्या (दस लाख) से चंदा अिकट्ठा करनेका लक्ष्य रखा गया है। मैं तो यह अपेक्षा भी रखता हूं कि चंदा देनेवाले सब लोग अैसे हों जिन्हें ठक्कर बापाके नाम और अुनके कामकी महत्ताका कुछ ज्ञान हो या दिया गया हो और जिन्हें अुनके प्रति आदर हो। कअी परिवारोंमें यह रिवाज होता है कि वे परिवारके हरअेक सदस्य, बच्चों तकके नामसे चन्दा देते हैं। यद्यपि अिस स्मारक निधिमें भी अिस तरह चन्दा दिया जा सकता है, लेकिन मेरी रायमें अैसा होना चाहिये कि जिन बालकों या दूसरे लोगोंको ठक्कर बापा, हरिजन-सेवा या आदिम-जाति-सेवा आदिका ज्ञान नहीं है, अुनकी गिनती अलग दाताके रूपमें न की जाय। अुदाहरणके लिअे, यदि पांच वर्षका कोअी बालक जिसने ठक्कर बापाका नाम और अुनकी कीर्ति सुनी है, अपने पालकसे अपने नाम पर चन्दा देनेके लिअे कहे, तो वह अैसा कर सकता है। लेकिन यदि कोअी पालक किसी अेक या दो सालके बालक (या अिससे बड़े, पर जिसे बापा और अुनके दो कार्योंकी कुछ भी जानकारी नहीं दी गयी है) के नाम पर कुछ देना चाहता है, तो अुसकी अलग गिनती न की जाय। चंदा अिकट्ठा करनेकी यह रीति स्वीकार करनेमें मकसद यह है कि बापाके लिअे आदर और हरिजनों तथा आदिम जातियोंके प्रति सहानुभूति रखनेवालोंकी संख्या मालूम की जाय और अिन कामोंका परिचय भरसक अधिकसे अधिक लोगोंको कराया जाय। चन्दा अिकट्ठा करनेवालेको मानो अिसमें यह आदेश है कि वह, अिस निधिका संग्रह करते हुअे, यथासंभव ज्यादासे ज्यादा घरोंमें जाय और ज्यादासे ज्यादा—बूढ़े या तरुण, स्त्री या पुरुष—लोगोंसे अुसके संबन्धमें बात करे।

(२) अिसी अुद्देश्यकी सिद्धिके खयालसे चंदेकी रकम कमसे कम चार आना रखी गयी है। अिस तरह गरीब आदमी भी अिस निधिमें सहयोग दे सकेगा। कोअी पूछ सकता है, अेक पैसा ही क्यों नहीं रखा? चार आना रखनेसे शायद हिसाब-किताबमें सुविधा होगी। लेकिन जो अितना नहीं दे सकते और कम देना चाहते हैं, अुनके लिअे भी देनेका रास्ता है। वे दो चार मिलकर चार आना या ज्यादा अिकट्ठा कर लें, और देकर रसीद किसी अेकके ही नामसे ले लें।

हमें स्मरण रखना चाहिये कि हरिजन-सेवाका काम गांधीजीको भी अुतना ही प्रिय था, जितना श्री ठक्कर बापाको। अुन्होंने तो अपनी प्रसिद्ध हरिजन-यात्राके बाद चलते-फिरते रेलगाड़ी और सार्वजनिक सभाओंमें अिस कामके लिअे पाअी-पाअी और पैसा-पैसा अिकट्ठा करते रहनेका नियम ही बना लिया था। वे अपने हस्ताक्षरोंकी फीस लेते और अिस तरह अिकट्ठी हुअी सारी रकम हरिजन-निधिमें जाती। अपनी वसीयतमें वे कह गये हैं कि अुनकी रचनाओंके प्रकाशनसे होनेवाले मुनाफेका २५ प्रतिशत हरिजन फंडको दिया जाय। गांधीजीके बाद हरिजनोंके लिअे अिस तरह सदा भिक्षापात्र लेकर घूमते रहनेकी यह परंपरा अब टूट गयी है। किसी दूसरेने अुसका अनुकरण अभी तक नहीं किया। मैं आशा करता हूं कि ठक्कर बापा स्मारक निधि अेक हद तक अिस कमीको पूरा करेगी।

(३) अिस निधिकी अेक अन्य विशेषता यह है कि ठक्कर बापाकी अिच्छाके अनुसार अिसमें हरिजनों और आदिम जातियोंके बीचमें प्रदेश, भाषा या वर्गकी भिन्नताके आधार पर कोअी भेद नहीं किया गया है। सारा भारत अेक अिकाअी माना गया है। यहां यह सिद्धांत दृष्टीमें रखा गया है कि प्रत्येक प्रदेश या समूहको अुसकी आवश्यकताके अनुसार दिया जाय और हरिजनों तथा आदिम जातियोंके हरअेक हितैषीसे अुसकी शक्तिके अनुसार लिया जाय।

(४) ठक्कर बापाकी सन्तानवत् प्रिय संस्थाओं — हरिजन-सेवक संघ और आदिम जाति सेवक संघमें कोअी होड़ या झगड़ा न हो, अिसलिअे अपील करनेवालोंने यह दूरदर्शितापूर्ण निर्णय किया है कि चंदा चाहे जिस संस्थाकी मारफत जमा हुआ हो, सारा चंदा अिकट्ठा जमा होगा और समान प्रमाणमें हरिजन और आदिम जाति दोनोंके लाभार्थ खर्च किया जायगा।

(५) यह अनुभव हुआ है कि चंदा अिकट्ठा करनेकी छूट हर किसीको देनेसे कअी कठिनाअियां आती हैं। हिसाब आसानीसे नहीं मिलता, चंदा अिकट्ठा होने पर भी समय पर केन्द्रमें नहीं भेजा जाता, और चंदा अिकट्ठा करते हुअे जो प्रासंगिक खर्च होता है, अुसका नियंत्रण भी मुश्किल हो जाता है। गरीबोंकी अिस निधिके बारेमें यह न हो, अिसलिअे अपील करनेवालोंने चंदा अिकट्ठा करने और रसीद देनेका अधिकार सिर्फ अपने विश्वसनीय कार्यकर्ताओंको ही देनेका निश्चय किया है।

www.vinoba.in

चंदा देनेकी अिच्छा रखनेवाले भाअी-बहन अपीलके अन्तिम भागमें जो सूचनाअें दी गयी हैं, अुन्हें कृपया ध्यानसे पढ़ें और अुनका पालन करें। जिस व्यक्ति या कार्यालयको यह अधिकार नहीं दिया गया है, अुसे चंदा न दें और चंदा देने पर रसीद जरूर लें।

मैं आशा करता हूं कि जो ठक्कर बापाके प्रति आदरभाव और हरिजनों तथा आदिम जातियोंके प्रति बन्धुभाव रखते हैं, वे सभी अपना चंदा अवश्य ही भेजेंगे। मैं तो यह विश्वास भी करना चाहता हूं कि अैसे कअी भाअी होंगे, जो अिस निधिमें अपना चन्दा प्रति वर्ष भेजनेकी प्रतिज्ञा लेंगे।

वर्धा, ७–५–'५१　　कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रजीसें)

ठक्कर बापा स्मारक निधि

अपील

स्वर्गीय ठक्कर बापाने ४० वर्षसे भी अूपरके लम्बे समयमें हरिजनों, आदिवासियों तथा पिछड़े हुअे वर्गोंको अुन्नत करनेमें तथा अकाल, बाढ़, भूकम्प और संक्रामक रोगोंसे पीड़ित मनुष्योंको बचानेके लिअे निष्काम भावसे जो बहुमूल्य सेवाअें की हैं, अुनको कौन नहीं जानता? अुनका कार्य मूक तथा ठोस था और मानवताकी चौड़ी तथा ठोस नीव पर अटल था। अुसके पीछे अधिकार तथा प्रसिद्धिकी भावना न थी और न कोअी स्वार्थ अथवा निकट राजनीतिक हेतु ही। मानवता और राष्ट्र निर्माणके लिअे अुनके लम्बे, स्थाअी, कठोर तथा प्राम्राणिक परिश्रमने अुनको सबका प्रिय बना दिया था, अिसमें वे भी आ जाते हैं, जिनका अुनसे थोड़े ही समयका परिचय था। अतः श्रद्धाके नाते अथवा अुस आदरके नाते जो अुन्होंने देशके करोड़ों मनुष्योंसे प्राप्त किया है, अुनके सहयोगियों, साथियों, प्रशंसकों तथा अनुयाअियोंकी जो कुछ वे कर सकते हैं, करनेकी स्वाभाविक अिच्छा है।

बापाका सच्चा स्मारक तो यही है कि कोअी भी मनुष्य बापाकी ही भावना तथा शैलीको लेकर अपने आप अुसी कार्यमें जुट जाय, जो अुनकी आत्माका मूक मंत्र था, और देशके करोड़ों प्राणियोंकी सेवा कर अपने कर्तव्यका पालन करे। तथापि अुनके प्रति श्रद्धा और प्रेमके संकेतस्वरूप कुछ भी योग्य भेंट चढ़ानेका विचार मनसे नहीं हटाया जा सकता।

ठक्कर बापा वास्तवमें निर्धनोंके अपने थे। वह निर्धनोंके ही लिअे जीते थे। अतः यह स्वाभाविक है कि अुनका स्मारक धनसे नहीं आंका जा सकता। अुसका मापदंड तो देशवासियोंकी वह संख्या है जो अपनी सामर्थ्यानुसार प्रेमपूर्वक छोटी या बड़ी धनराशिकी भेंट प्रदान करेंगे। वह कार्य, जिसका वह प्रतिनिधित्व करते थे, अितना बड़ा है कि कोअी भी धनराशि अुसको पूरा करनेके लिअे अपर्याप्त है। परन्तु यह हमारा पूर्ण विश्वास है कि यदि अुस कार्यकी भावना मनुष्योंके हृदयमें बैठ गअी है तो धनकी कभी भी कमी नहीं हो सकती। अिसलिअे स्मारकका लक्ष्य अुन मनुष्योंकी संख्या पर निर्धारित किया गया है जिन्होंने बापाके संदेशको अपने जीवनका ध्येय बना लिया है।

बापा स्मारक निधिका निर्णय, भारतीय आदिम जाति सेवक संघकी २० मार्च, १९५१की बैठकमें, जो डॉ० राजेन्द्रप्रसादजीकी अध्यक्षतामें हुअी थी, हुआ था कि कमसे कम दस लाख मनुष्योंसे धन अेकत्र किया जाय। निर्धनसे निर्धन चार आना भेंट करें तथा धनिक महानुभाव अधिकसे अधिक, कितना भी दे सकते हैं, जितनी अुनकी अिच्छा हो और निर्धनोंके कार्यके लिअे अुनकी आत्मा प्रेरणा दे। अधिकसे अधिक देनेकी कोअी भी सीमा नहीं है। अेकत्रित धनका प्रबन्ध, बापाके बालक हरिजन सेवक संघ तथा भारतीय आदिम जाति सेवक संघ दोनोंके चुने हुअे सदस्योंकी अेक संयुक्त समिति करेगी जिसमें आवश्यकता होने पर कोआप्टेड सदस्य भी सम्मिलित किये जा सकते हैं। चूंकि यह निधि वास्तवमें निर्धनोंके लिअे है अतः अिसके प्रबंध आदिमें कमसे कम व्यय करने पर ध्यान रक्खा गया है।

अेकत्रित धन संपूर्ण भारतमें हरिजन तथा आदिवासियोंमें शिक्षा तथा सफाअीको बढ़ाने, आर्थिक स्थितिको सुधारने तथा रोगोंसे राहत दिलाने आदिके लिअे बराबर बराबर, देशके किस भागसे कितना मिला अिसका विचार किये बिना खर्च किया जायगा। हमने बापा ही की तरह सम्पूर्ण भारतको अेक अिकाअी माना है और यह धन अुसके हरअेक भागमें वहांकी आवश्यकता तथा कार्यक्षमताके अनुसार खर्च किया जायगा।

निधि अिकट्ठा करनेका कार्य बापाकी पहली पुण्यतिथि, १९ जनवरी, १९५२ तक चालू रखा जायगा। चूंकी बापाका कार्य भविष्यमें और अधिक बड़े पैमाने पर चलाना है, अतः अुस तिथिके बाद भी धन स्वीकार किया जायगा और अुस अर्थमें फण्ड बन्द नहीं माना जायगा।

अतः हम सभी धनिकों और निर्धनोंसे अपील करते हैं कि अिस स्मारकके लिअे बापाके प्रति श्रद्धाके नाते और आगामी राष्ट्र व मानवताके अुत्थानके नाते भी अपनी-अपनी सामर्थ्यानुसार भेंट प्रदान करें।

भिन्न स्थानों पर धन अेकत्र करनेके लिअे स्थानीय कार्यालयोंका प्रबंध किया जा रहा है जहां पर भेंट स्वीकार होगी और रसीद दी जायगी। यह सानुरोध प्रार्थना है कि प्रमाणित अेजन्टके अतिरिक्त किसीको भी धन न दिया जाय और बिना रसीद लिये तो हरगिज न दिया जाय। प्रमाणित अेजन्टों तथा कार्यालयोंकी सूची शीघ्र ही समाचारपत्रोंमें प्रकाशित हो जायगी। तब तक कोअी भी जानकारी, भारतीय आदिम जाति सेवक संघ हरिजन निवास, किंग्सवे, दिल्लीके मंत्रीसे की जा सकती है और धन भी वहीं भेजा जा सकता है।

पुरुषोत्तमदास टंडन	ग० वा० मावलंकर
गोविन्दवल्लभ पंत	हृदयनाथ कुंजरू
बी० जी० खेर	रामेश्वरी नेहरू
घनश्यामदास बिड़ला	देवदास गांधी
श्रीकृष्ण सिन्हा	विष्णुराम मेधी
हरेकृष्ण महताब	अनुग्रहनारायण सिन्हा
राजकृष्ण बोस	शान्तिकुमार न० मोरारजी
लक्ष्मीदास मं० श्रीकान्त	वियोगी हरि
स्वामी रामानन्द तीर्थ	भगीरथ कनोड़िया
जहांगीर पटेल	गोपबन्धु चौधरी
मा० श्री० अणे	वी० भाष्यम् आयंगर

दिल्ली, ३० अप्रैल, १९५१

आमकी गुठली

आमका मौसम शुरू हुआ है, अुसकी गुठलीके भीतरका मेवा अुपयुक्त खुराक है, यह याद रखा जाय। कोअी अुद्योगप्रिय व्यक्ति या संस्था अिन गुठलियोंको अिकट्ठा करके अुनका अुपयोग करनेके बारेमें सोच सकती है। वर्धामें मगनवाड़ीके विद्यार्थियोंने अैसा शुरू करनेका विचार किया है।

वर्धा, १०–५–'५१　　कि० घ० म०

सर्वोदयका सिद्धान्त

कीमत ०-१२-०　　डाकखर्च ०-२-०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-९

www.vinoba.in

शराब और थकान

[बिहारसे अेक भाअी लिखते हैं कि खानोंमें काम करनेवालोंके लिअे शराब अच्छी चीज है, क्योंकि वह सस्तीसे सस्ती और कामकी थकानको बहुत आसानीसे मिटानेवाली है। मुझे यह भ्रम था कि अेक पीढ़ीसे भी ज्यादा समय तक गांधीजीने शराबबन्दीके लिअे जो जोरदार आन्दोलन किया अुसके कारण भारतमें शराबके बारेमें यह घोर अज्ञान और घातक अंधविश्वास मिट गया होगा। बिहारके और अन्य प्रदेशोंके सुधारकोंको आम जनता और अूंचे वर्गके लोगोंमें भी अभी तक जमा हुआ यह गलत विश्वास मिटाना चाहिये। नीचेका हिस्सा श्री च० राजगोपालाचार्यकी 'अिंडियन प्रोहिबीशन मेन्युअल' नामक पुस्तिकासे लिया गया है। अिससे वह गलत विश्वास दूर हो जायगा, जो बिहारके अिन पत्र-लेखक जैसे लोगोंके मनमें अज्ञानके कारण जमा हुआ है।

—म० देसाअी]

कुछ लोगोंका खयाल है कि थोड़ीसी तेज शराब लेनेसे अुन्हें पोषण मिलेगा और वे अपना काम कर सकेंगे। अच्छेसे अच्छे डॉक्टरी प्रमाणका कहना है कि शराबका अिससे बिलकुल अुलटा असर होता है। खेतोंमें, कारखानोंमें और खानोंमें सख्तसे सख्त काम करनेवाले मजदूरों, मार्च करनेवाले सैनिकों, और मशहूर पहलवानोंने अिस बातका प्रमाण दिया है कि तेज शराब लेनेके बजाय न लेने पर ज्यादा अच्छा काम हो सकता है।

बीयर, ताड़ी या शराबमें कोअी पोषण नहीं होता। अिन पेयोंमें अत्यन्त कम मात्रामें अैसा पदार्थ पाया जाता है जिसे अन्न कहा जा सकता है। लेकिन अेक गेलन बीयर या ताड़ीके बनिस्बत चावल या गेहूंके कुछ दानोंमें ज्यादा पोषक तत्त्व होते हैं। शराबमें नाममात्रके लिअे पाये जानेवाले पोषणसे जहरकी मात्रा कहीं ज्यादा होती है। शराबमें पोषण है, अैसा लोग अिसलिअे मानते हैं कि वह भूखको मार देती है, लेकिन यह शराबके भोजन होनेसे बिलकुल भिन्न बात है।

चूंकि ताड़ी ताड़वृक्षसे निकाली जाती है, या शराब अंगूरके रससे बनती है, या बीयर और व्हिस्की अनाजोंसे बनती है, अिसलिअे हमें यह विश्वास नहीं कर लेना चाहिये कि अिन पेयोंमें फलों या अनाजके पोषक या दूसरे अच्छे गुण हैं। अुठनेवाला खमीर सारी चीजको ही बदल देता है और भोजनको जहर बना डालता है। जो शकर भोजनके रूपमें थी, वह खमीरके कारण दो बिलकुल अलग-अलग पदार्थोंमें बंट जाती है: आल्कोहोल और कार्बोनिक अेसिड।

आज दुनियामें शायद ही कीअी अैसा मशहूर वैज्ञानिक होगा जो अिन नशीले पेयोंमें खुराकके तत्त्व बतानेको राजी किया जा सके।

ये नशीले पेय शक्तिदायक नहीं होते। अुलटे वे शक्तिको नष्ट कर देते हैं। शराब स्नायुओंकी शक्तिको घटा देती है। दुनियाके अच्छेसे अच्छे डॉक्टरों और विशेषज्ञोंकी यही राय है।

जनवरी १९१८ के अेक वक्तव्यमें सर्जन-जनरल अिवोट, सर आल्फ्रेड पीग्रर्स गाअुल्ड, सर फ्रेडरिक ट्रेविस, प्रो० सिम्स वूडहेड डॉ० सेलीबी और दूसरे बहुतसे मशहूर भारतीय और ब्रिटिश डॉक्टरोंने, जिन्हें पूर्वीय परिस्थितियोंका अच्छा अनुभव था, अिस बातका प्रमाण दिया है कि थोड़ी मात्रामें ली जानेवाली शराब, अफीम या दूसरे नशीले पदार्थ "हानी पहुंचाते हैं, खासकर भारत जैसे अुष्ण कटिबंधवाले देशोंमें। वे शारीरिक या मानसिक तनावसे राहत दिलानेमें हमेशा अुपयोगी सिद्ध नहीं होते।"

शराब थकावटके कारणको मिटानेमें जरा भी सहायक नहीं होती। वह नतीजेको समझनेकी शक्तिको मार देती है। अगर थकावटको दूर करनेके लिअे बार-बार अुसका अुपयोग किया जाय तो अुसको ज्यादा बड़ी मात्रायें लेनेकी जरूरत होती है।

शराबके अिस्तेमालसे जो क्षणिक आराम, आनन्द या शक्ति महसूस होती है, अुसकी तुलना अुस आराम या अधिकारकी भावनासे की जा सकती है, जो अेक निर्दय सूदखोरसे पैसे अुधार लेनेके बाद हममें पैदा होती है। अैसा करके हम पहलेसे कहीं ज्यादा गरीब हो जाते हैं।

दुनियाके टेनिस चेम्पियन ब्रूक्सने कहा था: "अब मेरा सक्रिय खेल-कूदका जीवन लगभग खतम होनेको आया है, अिसलिअे किसी भी खेलमें अूंचीसे अूंची योग्यता प्राप्त करनेकी अिच्छा रखनेवाले सब नौजवानोंको मेरा यही सन्देश है: 'किसी भी तरहकी शराबको मत छूओ।'" डब्ल्यु० टी० टिल्डनने कहा है: "मुझे पक्का विश्वास है कि यहां तम्बाकू और शराबका अुल्लेख अुस मूर्खके सम्बन्धमें नहीं है, जो हमेशा बीड़ी-सिगरेट फूंका करता है या जितनी भी शराब मिल जाय पीनेकी कोशिश करता है। यहां मेरा मतलब थोड़ी बीड़ी-सिगरेट या थोड़ी शराब पीनेवालोंसे है, अगर अैसे कोअी लोग सचमुच हों। तम्बाकू और शराब दोनों शरीरमें मिल जाती हैं और समय आने पर नुकसान पहुंचाती हैं।" जेक डेम्सेने कहा था: "मैं शराबसे पूरा परहेज रखता हूं। मैंने कभी शराब नहीं पी। जो नौजवान खेलोंमें होड़ करना चाहता है, अुसके किसी भी रूपमें शराब पीनेका मैं विरोध करता हूं।"

(अंग्रेजीसे)

च० राजगोपालाचार्य

आजके जमानेकी मांग — आर्थिक समानता

ता० ८-४-'५१ से ११-४-'५१ तक शिवरामपल्लीम जो सर्वोदय सम्मेलन हुआ अुसमें अन्य विषयोंके साथ आर्थिक समताके बारेमें भी कुछ चर्चा हुअी। लेकिन देशकी आजकी परिस्थिति तथा आम जनताकी मनोवृत्ति देखते हुअे कअी सर्वोदय सेवकोंको अैसा लगा कि अिस विषय पर अधिक चर्चा होना जरूरी है। अिसलिअे अुन्होंने आर्थिक समताके कार्यमें विशेष दिलचस्पी लेनेवाले सज्जनोंकी, सम्मेलनकी छुट्टीके समयमें, बैठक बुलाअी, जिसमें ४०-४५ भाअी-बहन हाजिर थे। अिस विषयमें रुचि रखनेवाले सब सेवकोंका अेवं मित्रोंका परस्पर परिचय हो, सम्पर्क बढ़े, अेक-दूसरेसे सलाह-मशविरा करें और किसी भी आर्थिक समस्याका अहिंसक हल क्या होना चाहिये अिस बारेमें बुजुर्गोंकी सलाह ली जाय अिसलिअे अेक अनुशासन विहीन मित्रमंडल हमने स्थापित किया तथा अुसके मंत्रीका काम मुझे सौंपा गया।

अिस बैठकमें यह तय हुआ कि सहयोगी समितियां, श्रमिक संघ और ग्रामपंचायतोंमें हम काम करें तथा अहिंसक ढंगसे आर्थिक विषमता हटानेका प्रयत्न करें।

अिसके साथ-साथ मेरे खयालसे यह भी अुचित होगा कि अिस भाअीचारेके सदस्य तथा आर्थिक समता चाहनेवाले अन्य भाअी-बहन भी अपनेको अपनी जायदादका ट्रस्टी मानें और प्रथम कदमके तौर पर अपनी जायदाद और आयको सब भाअी-बहनोंके सन्मुख घोषित करें। अिस प्रकार सब भाअी-बहन आर्थिक विषमताको मिटानेके लिअे अेवं अिस समस्याको सुलझानेका अहिंसक तरीका ही सच्चा तरीका है अिस बातका प्रचार करनेके लिअे स्थानिक आर्थिक समितियां कायम करें।

अिस काममें रुचि रखनेवाले भाअी-बहनोंसे मैं अिस निवेदन द्वारा प्रार्थना करूंगा कि वे अपने सुझाव, टीका-टिप्पणी अित्यादि निम्न पते पर भेजें और जो अिस मित्रमंडलमें शरीक होना चाहते हों वे अपने नाम कृपया मुझे भेजें। अिसी प्रकार अपनी स्थानिक आर्थिक समस्याओंके बारेमें भी वे कृपया लिखकर भेजें, ताकि अिन समस्याओंके सम्बन्धमें रचनात्मक कार्यक्रमके नेताओंकी सलाह लेकर अुसका लाभ सबको देनेका मैं प्रयत्न कर सकूं।

ठाकुरदास बंग

ग्राम—महाकाल पोस्ट—सुरगांव तालुका
जि० वर्धा

www.vinoba.in

हरिजनसेवक
१९ मअी १९५१

आय और सम्पत्ति

मैं पाठकोंका ध्यान अिसी अंकमें अन्यत्र प्रकाशित स्वामी सीतारामजीके 'आर्थिक समानता' शीर्षक लेख पर दिलाता हूं।

यहां कोअी सैद्धांतिक मतभेदकी बात नहीं है। सवाल अिस विषयमें तात्कालिक लक्ष्य तय करनेका ही है। यह लक्ष्य अैसा होना चाहिये, जिस पर हम (१) सच्ची लोकतन्त्र सरकार द्वारा बनाये गये कानून और (२) व्यक्तियों द्वारा अपनी अिच्छासे किये गये त्यागके दुहरे मार्गोंसे पहुंच सकें। व्यक्तियोंके त्यागकी कोअी सीमा बांधनेकी जरूरत नहीं है। अिसलिअे दरअसल हमें सोचना यह है कि आय और निजी सम्पत्ति कम करनेके लिअे विधान-सभाओंमें जनताके प्रतिनिधियोंको कानून बनानेके लिअे और अुसका अमल करवानेके लिअे किस हद तक तैयार किया जा सकता है। यदि सत्ता पर किसी अैसे राजनीतिक दलका अधिकार हो जाय जिसने श्री सीतारामजी द्वारा पेश किये गये लक्ष्य पर पहुंचनेकी प्रतिज्ञा की हो, तो मैं खुशीसे अुनके लक्ष्यका स्वीकार कर लूंगा और अपने सुझाये हुअे लक्ष्य छोड़ दूंगा।

देशकी आजकी विषम परिस्थितिमें और वयस्क मताधिकारका खयाल करते हुअे निजी संपत्तिकी ज़ब्ती आदिकी आकर्षक योजनाअें पेश करना कुछ कठिन नहीं है; और धनका समान बंटवारा शीघ्र ही कर दिखानेका वचन जो दल देगा, वह अुस दलके बनिस्बत ज्यादा जनप्रिय भी बन सकता है जिसका लक्ष्य साधारण-सा है। अैसे दलके पास यदि पर्याप्त संगठनशक्ति हो तो अुसे चुनावोंमें बहुमत भी मिल सकता है, और वह बड़े-बड़े कानून भी बना सकता है। लेकिन कानून पास कर देनेसे ही तो अुद्देश्यकी पूर्ति नहीं हो जाती।

जब अमलकी बात आती है, तब यदि अिस कानूनसे जिस वर्गकी हानि हो रही है, अुस वर्गके लोगोंकी काफी अच्छी संख्याने अिस परिवर्तनको मनसे स्वीकार नहीं किया हो, और कुछ लोगोंने स्वेच्छासे अुसे अपने जीवनमें अुतार नहीं दिया हो, तो बड़ी मुश्किल होती है। कानूनका अमल अशक्य हो जाता है और मंत्रियोंकी स्थिति अैसी हो जाती है मानो अेक ओर कुंआ और दूसरी तरफ खाअी हो। अुस दशामें सरकारी अधिकारी और धनिक वर्ग दोनों मिलकर अुस कानूनको नाकामयाब करेंगे, और आजकी व्यवस्थामें जिस भ्रष्टाचारकी हम शिकायत करते हैं, वह चलता रहेगा। अिसलिअे जब तक अैसे लोगोंकी, जिन पर अुसका प्रतिकूल असर होनेवाला है, किसी कानूनके साथ समझ-बूझके साथ सहमति नहीं हो, तब तक कानून कम-से-कम अंशतः विफल सिद्ध होते हैं। अिसलिअे जरूरत अिस बातकी है कि हम काफी अच्छी संख्यामें अैसे लोगोंका निर्माण करें, जो कानूनकी राह न देखते हुअे, स्वेच्छापूर्वक त्यागके लिअे राजी हों। और अिसे सम्भव बनानेके लिअे हमें धन पर ही निर्भर रहनेवाले जीवनसे अूंचे प्रकारके जीवनकी अभिलाषा काफी बड़े पैमाने पर निर्माण करनी चाहिये।

यह कोअी असंभव काम नहीं है। सिर्फ अनीति और पाप ही तेजीसे और तीव्रतासे फैलते हों, अैसी बात नहीं। गांधीजीने किस तरह अेक पीढ़ीसे भी कम समयमें राष्ट्रमें अेक नयी शक्ति जगा दी, यह तो हमने देखा ही है। अुतने ही कम समयमें मुहम्मदने भी सारे अरबमें बिजलीका संचार कर दिया था। हरअेक राष्ट्रके अितिहाससे अैसे अनेक अुदाहरण दिये जा सकते हैं। यदि सर्वोदयके साधक संदेश-वाहकोंमें सही प्रेरणा और कामकी लगन है, और यदि अुनका अपना जीवन अुनकी शिक्षाका ठीक अुदाहरण है, तो हमारी अभीष्ट क्रांति हमारी कल्पनासे भी पहले हो सकती है। लेकिन यदि वे कमजोर हैं, तो दुनिया आज जहां है, अेक सदीके बाद भी वहीं रहेगी। तब यह भी मुमकिन है कि बल और हिंसामें जिनका विश्वास है अैसे लोग कुछ कालके लिअे बाजी मार लें, और हम जिन परिवर्तनोंकी अिच्छा करते हैं, अुन्हें अूपरी तौर पर ये लोग कर दिखायें। अुससे आर्थिक समानताकी स्थापना शायद हो भी जाय, पर सर्वोदयकी सिद्धि नहीं होगी।

अिन्हीं सब कारणोंसे न तो हम पहला कदम रखनेकी ही कोअी अवधि निश्चित कर सकते हैं और न पहले और दूसरे कदमके बीचका ही कोअी समय निर्दिष्ट कर सकते हैं। सारी चीज हमारी कोशिशकी तीव्रता और साधनोंकी शुद्धि पर निर्भर है।

अिसके सिवा दुनिया भी तो हमारे अनुमानसे कहीं ज्यादा तेजीसे बदल रही है। परिवर्तन दोनों ही दिशामें हो रहा है। तथाकथित जनतंत्र राज्य कभी तो फासीजम और कभी साम्यवादकी ओर बढ़ते जा रहे हैं। जनताके मन पर कभी तो हिंसा और युद्धका नशा चढ़ जाता है और कभी वह शांति और प्रेम पर मुग्ध जान पड़ती है। भारत और पाकिस्तान आगामी कुछ ही वर्षोंमें या तो अेक दूसरेके विनाशमें तत्पर दिखेंगे, या दोनोंमें अितना मेल और भाअीचारा हो जायगा कि दुनिया देखकर चकित हो जायगी। और वह शत्रुता या मित्रता बिलकुल स्थायी या अेकदम अस्थाअी भी हो सकती है।

हम भविष्य नहीं जानते, और अिसलिअे किसी भी लक्ष्यके लिअे समयकी निश्चित अवधि भी नहीं रख सकते। लेकिन हम जानते हैं कि जिस तरहकी हमारी प्रकृति और संस्कार हैं, अुन्हें ध्यानमें रखते हुअे हम अपनी सुख-शान्ति सिर्फ सर्वोदयके लिअे प्रयत्न करके ही हासिल कर सकते हैं। फासिस्टवाद, साम्यवाद, सम्प्रदायवाद या किसी दूसरी हिंसाश्रित विचारधारासे हमें अपनी अभीष्ट सुख-शांति नहीं मिल सकती।

मैंने जो पहला कदम सुझाया है, अुसकी दिशामें मैं, यदि हो सकता हो तो, नये चुनावोंके पहले ही प्रयत्न करना चाहूंगा। और यदि मेरे 'छूमन्तर' कह देनेसे वह पाया जा सकता, तो मैं अुसे कहनेमें भी नहीं हिचकता। लेकिन मुझे लगता है कि हमारे युगके 'व्यवहार-चतुर' लोग मुझे मेरे अिन अितने अल्प और अपर्याप्त लक्ष्योंके बावजूद अेक स्वप्नदृष्टा मानेंगे। तब भी मेरा श्री सीतारामजीके आदर्शसे, या किसीके अुससे भी बड़े आदर्शसे कोअी विरोध नहीं है। और यदि वे अुसकी प्राप्तिका रास्ता बता सकें तो मैं अुसे हृदयसे स्वीकार करूंगा।

वर्धा, २१-४-'५१ कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

पंचविध कार्यक्रममें पं० नेहरूका हिस्सा

पाठकोंको याद होगा कि शिवरामपल्लीके सम्मेलनमें शुद्ध व्यवहार, सफाअी, श्रमनिष्ठा, शांति स्थापना और अेक गुंडी सूतके सभपंथु — का पंचविध कार्यक्रम जनताको सुझाया गया है। पं० जवाहरलाल नेहरूने अिसमें अपना हाथ बंटानेका संकल्प किया हो अैसा अुनके वर्तावसे अनुमान किया जा सकता है। कुछ दिन हुअे अेक लंबा नाला खोदनेके काममें अुन्होंने सहयोग दिया था, अैसा अखबारोंमें जाहिर हुआ था। अभी दिल्लीमें हुअी कांग्रेस महासमितिकी बैठकमें सभासदों द्वारा खापरवाहीसे अिधर-अुधर फेंके हुअे केले, संतरे आदिके छिलके वगैरा अुठाकर अुन्होंने सफाअी-कामकी प्रतिष्ठा बढ़ाअी। युद्धको रोकनेके लिअे वे कितना बलवान प्रयत्न कर रहे हैं, कौमी अेकताके लिअे अुनका कितना आग्रह है, यह तो प्रसिद्ध ही है। अिस तरह वे जनताके सामने अेक अच्छा नमूना पेश कर रहे हैं, जो सबके अनुकरण करने योग्य है।

वर्धा, ८-५-'५१ कि० घ० म०

www.vinoba.in

आर्थिक समानता

३१ मार्चके 'हरिजन'में श्री किशोरलाल मशरूवालाने आर्थिक समानता पर अपने सुचिन्तित विचार प्रगट किये हैं। अुनका स्पष्ट कहना है कि "यदि अधिकतम आयकी मर्यादा हम सार्वजनिक (सरकारी तथा सार्वजनिक संस्थाओंमें काम करनेवाले) सेवकोंके लिअे मासिक दो हजार रुपये और व्यवसायी लोगोंके लिअे मासिक पांच हजार रुपये तथा अधिकतम खानगी सम्पत्तिकी मर्यादा सभीके लिअे दस लाख रुपये तय कर सकें, तो प्रथम कदमके रूपमें मैं अुसे निभा लूंगा।"

श्री मशरूवाला मेरे आदरणीय बन्धु हैं और मैंने अुनकी अिस राय पर अुचित ध्यानके साथ गम्भीरतापूर्वक विचार किया है। लेकिन मुझे खेद है कि अुन्होंने जो सीमायें कायम की हैं, अुनसे मैं सहमत नहीं हो सकता।

सर्वोदय समाज या स्वराज्यमें वैयक्तिक सम्पत्तिके लिअे कोअी स्थान ही नहीं हो सकता। यदि बीचके समयके लिअे सम्पत्तिमें कुछ भेद रखने ही हों, तो विषमता अितनी बड़ी या असामान्य नहीं होनी चाहिये। वह कमसे कम होनी चाहिये। अैसी वैयक्तिक सम्पत्ति रखनेसे सम्पत्तिके मालिकको कोअी लाभ नहीं होगा। वह अुसका अुपयोग विशेष सुख-सुविधाअें हासिल करनेमें और अुनका अुपभोग करनेमें नहीं कर सकेगा। अुलटे, अुसके कारण अुसकी स्थिति विचित्रसी बन जायगी; यहां तक कि वह समाजमें तिरस्कारका पात्र बन जाय, तो कोअी आश्चर्य नहीं।

परिवर्तन-कालकी अवधि भी श्री किशोरलालभाअीको निश्चित कर देनी चाहिये थी। शायद भूलसे ही यह बात रह गयी हो। मेरी रायमें यह अवधि ज्यादासे ज्यादा १० साल हो सकती है, अुससे अधिक किसी तरह नहीं। अस्पृश्यता दूर करनेके लिअे यही अवधि रखी गयी थी। आर्थिक असमानताअें दूर करनेके लिअे भी अिससे ज्यादा न तो आवश्यक है, न वांछनीय। अेक सामान्य भारतीय नागरिककी सारी चल और अचल सम्पत्तिकी कीमत, अुसकी वर्तमान औसत वार्षिक आय २५० रु० मानें तो २५ वर्षके संग्रहके हिसाबसे मोटे तौर पर ६००० रु० मानी जा सकती है। अिस तरह १० लाखकी सम्पत्तिका मालिक १६६ गरीबोंके बराबर होगा। लोकतंत्रके हरअेक सिद्धांतकी अुपेक्षा करनेवाला यह समीकरण —जो वास्तवमें विषमीकरण ही है— बिलकुल अन्यायी है। लोकतंत्र गणराज्यमें हरअेक नागरिकका मत समान होता है। अिससे सूचित होता है कि प्रत्येकका दरजा और प्रतिष्ठा समान है। लेकिन जहां सम्पत्ति असमान है, वहां गरीब मतदाता अमीर मतदाताकी तुलनामें बिलकुल नगण्य हो जाता है।

तब किसीको २५००० रु० से ज्यादा सम्पत्ति रखनेकी छूट नहीं होनी चाहिये और सो भी १० वर्षसे ज्यादा समयके लिअे नहीं। अिसमें भी योजना अैसी होनी चाहिये कि यह सम्पत्ति खुद-ब-खुद घटकर सामान्य मनुष्यके लिअे निर्धारित कमसे कम मर्यादाके तल पर आ जाय। अिस तरह धनके परिमाणमें धीरे-धीरे जितनी कमी होती जायगी, अुस मनुष्यके सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक प्रभावमें अुतनी ही वृद्धि हो सकेगी।

ज्यादासे ज्यादा मासिक आय क्या हो, अिस सवालका विचार भी अिसी दृष्टिसे होना चाहिये। औसत मासिक आय प्रति व्यक्ति २० रु० मानने पर अेक बड़ा व्यापारी २५० सामान्य व्यक्तियों, और बड़ा सरकारी अधिकारी १०० सामान्य व्यक्तियोंके बराबर होगा। अिस श्रेणीकी आयोंकी क्रमिक कमीके लिअे भी कोअी वैसी ही योजना और निश्चित अवधि आदि होनी चाहिये। निजी संपत्तिकी समाप्ति तीन तरहसे हो सकती है: (१) नाराज दरिद्र वर्ग अुसे छीन ले, (२) सुव्यवस्थित समाजमें कानून द्वारा की जाय, (३) मालिक अपनी राजीखुशीसे सच्चा ट्रस्टी बन जाय। परिवर्तनका यह आखिरी मार्ग सर्वोत्तम है, और पहला सबसे बुरा है। जिन देशोंमें शासनकी पार्लमेंटरी पद्धति प्रचलित है, वे सामान्यतः दूसरे मार्गका अवलम्बन करते हैं।

सम्पत्तिकी हद और परिवर्तन-कालकी मुद्दत जो भी हो, सम्पत्तिके मालिकको चाहिये कि वह अुस समय तक अपनी अुस सम्पत्तिका ट्रस्टी बनकर रहे।

हमारे देशके प्राचीन ऋषि-मुनि धनकी अैसी घृणित और विनाशक विषमताअें सहन ही नहीं कर सकते थे। अुन्होंने दान-धर्मका आदेश दिया है, अिसके सिवा अुन्होंने विश्वजित् यज्ञकी योजना की थी। राजा और श्रीमान सात वर्षमें अेक बार यज्ञ करते थे जिससे सारा धन व्यक्तिसे समाजके पास चला जाता था। अिने-गिने धनिकोंके पास अेकत्र हुआ धन अिस तरह दुबारा बंट जाता था। समाजमें सम्पत्तिका चलना फिरना अबाध रूपसे जारी रहे, अिसके लिअे स्वाभाविक धर्मपोषक और कल्याणकारी मार्ग यही है। अैसा हो तो भी धन-सम्पत्तिकी अधिष्ठात्री लक्ष्मीका 'चंचला' नाम सार्थक हो सकता है।

आधुनिक समाज अिन यज्ञोंका और दान-धर्मका महत्त्व भूल गया है, अिसीलिअे अुस पर अैसी अपार विपत्ति आयी है, जिससे गरीब और अमीर दोनोंका ही जीवन दूषित हुआ है, मानव-जातिके लिअे बिलकुल स्वाभाविक प्रेम और सौहार्दके स्रोत विषाक्त हो गये हैं और सब जगह द्वेष, घृणा और आपसी संघर्ष मच रहा है।

ग्रामोद्धार और श्रम-निष्ठाका धर्म हम अपनायें, तो मानव-समाजके निराधार पावोंको मानो फिरसे जमीनका आधार मिल जायगा, सर्वोदयका मंगल प्रभात प्रगट होगा, और सुख, सम्पत्ति तथा कल्याण हरअेक घरमें समान रूपमें बरसेगा।

विनयाश्रम — सीताराम

(अंग्रेजीसे)

श्री मणिलाल गांधीके पास आये संदेश

श्री मणिलाल गांधीने दक्षिण अफ्रीकाकी सरकारकी रंगभेदकी नीतिके खिलाफ चौदह दिनका अुपवास किया था। देश-देशान्तरसे शुभेच्छाओंके अनेक संदेश अुस समय अुनके पास आये। यहां अुनमें से कुछ दिये जा रहे हैं:

डॉ० हेलन केलर

मैं अुन्हें अपनी शुभेच्छाअें भेजती हूं। अुनके पिताकी शिक्षाओंका मेरे मन पर गहरा संस्कार हुआ है और मैंने अुन्हें अपने हृदयमें प्रेमपूर्वक सजाकर रखा है। मैं प्रार्थना करती हूं कि जिस अुद्देश्यके लिअे वे यह कष्ट स्वीकार कर रहे हैं, वह यशस्वी हो।

श्री पुरुषोत्तमदास टंडन, अ० भा० राष्ट्रीय कांग्रेसके अध्यक्ष

धर्मकी अुज्ज्वल भावनासे प्रेरित आपके अिस अुपवासमें भगवान आपका सहायक हो। अ० भा० राष्ट्रीय कांग्रेस हमेशा जातियोंकी समानताके पक्षमें रही है। रंग, जाति और वर्गके आधार पर किये गये सब भेदोंको वह बर्बरताका अवशेष मानती है। किसी दिन, जब 'युनो' की न्यायबुद्धि आजकी अपेक्षा ज्यादा जाग्रत होगी, तब अुसे अिस तरह संगठित क्रूरताके खिलाफ लड़ना ही पड़ेगा।

भारतीय कांग्रेस, इवाओस्तर रेनेकि

पीड़ित मानवताके हितार्थ अपने अिस अुज्ज्वल तप और त्याग पर हमारी बधाअियां लीजिये। आपका प्रयत्न सफल हो।

जातीय समानता कांग्रेस, न्यूयार्क

समानता और स्वतंत्रताके हितमें आपके अिस वीर और अहिंसक संग्राममें हम आपके साथ हैं।

www.vinoba.in

ट्रान्सवाल अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस

भगवान आपका साक्षी रहे। परसेवाके लिअे आपके अिस अुपवासमें विवेक और प्रेम आपका मार्गदर्शन करे, तथा बल और सांत्वना दे।

अेक अज्ञात अमेरिकन मित्र

साधु! आपके अिस श्रेष्ठ प्रयत्नमें हम सदा आपकी याद कर रहे हैं। और हम जिस तरह बने आपकी मदद करना चाहते हैं। आज आपके पिताकी तरह जो सिद्धांतके लिअे अपना बलिदान कर सकें, अैसे लोगोंकी बड़ी आवश्यकता है। आपका यह अुदाहरण दुनिया भरके लोगोंको प्रेरणा देगा।

ट्रांसवाल भारतीय कांग्रेस

श्री मणिलाल गांधी गैर-युरोपियन लोगोंके खिलाफ अफ्रीकन सरकारकी रंगभेदकी नीतिका अहिंसक और फलप्रद प्रतिकार करनेके लिअे अपने अिस अुपवासके द्वारा अेक मनुष्योचित बेहतर साधनका निर्माण कर रहे हैं। हम अुनके अिस आत्मप्रेरित और साहसपूर्ण निर्णयका स्वागत करते हैं, और अुनका अभिनन्दन करते हैं।

('अिंडियन ओपिनियन'से अनूदित)

विनोबाकी पैदल यात्रा

७

चौदहवां मुकाम

[ता० २१-३-'५१: गोपाल पेठ: चौदह मील]

पांच मीलका पहाड़ीका रास्ता, और कुल चौदह मीलकी यात्रा! लेकिन जो दृश्य गोपाल पेठमें देखा, अुसमें किसीकी भी थकान अुतर सकती थी। पिछले गांवमें हमने नदीका अुगम देखा। यहां अुसका पूर्व वैभव। विनोबाने तो कहा: "आप लोगोंमें मैंने आज मानो सुदर्शन चक्रधारी भगवानके ही दर्शन किये।" अैसा ही अद्भुत दृश्य था वह! "आजकी सभा जो देखते, वे अगर मनमें शंका रखते हैं कि अिन दिनों चरखा कैसे चलेगा, तो यह दृश्य देखकर समझ जाते।" आज अिन लोगोंने बता दिया कि देहातके लोग खेती तो कर ही सकते हैं, परंतु चरखा चलाकर कपड़ेके बारेमें भी आसानीसे स्वावलंबी हो सकते हैं।

अगर मैं खुद अुस सारे दृश्यका साक्षी न रहता, तो मुझे भी सारी कहानीमें कुछ न कुछ अतिशयोक्तिका आभास होता। अेक मील दूर, गांवके करीब-करीब सभी लोग विनोबाजीको लेने आये। माताअें हाथमें आरती लिये खड़ी थीं। सारा गांव साफ-सुथरा, लिपा-पुता, अलपनाओंसे भरा हुआ, तोरन-पताकाओंसे लदा हुआ। गांवके बाहर, लेकिन गांवसे बिलकुल सटकर, जामुन, आम और पलाशके पल्लवोंकी कुटियोंमें हमारा डेरा था। कहीं भी कील या लोहेका अुपयोग नहीं था। अेक बड़ा लतामंडप, अेक कुटिया विनोबाजीके लिअे, अेक साथियोंके लिअे, अेक रसोअीघर, स्नानघर, शौचालय। सारा केवल पल्लवाच्छादित, अति सुशोभनीय, अति प्रसन्न और अति नयनमनोहर!

हम लोगोंको आये थोड़ी ही देर हुअी होगी। भोजनादिके बाद लोग अपने-अपने काममें लगे। भोजनादिसे निवृत्त होना तय हुआ कि अितने ही में अैसा मालूम हुआ मानो पश्चिमकी ओरसे कोअी बड़ी यात्रा हमारी ओर चली आ रही हो। आगे-आगे देहाती वाद्य, पीछे बालक-बालिकाओंकी सुव्यवस्थित कतारें, अुनके पीछे सिर पर चरखा लिये सौसे अधिक स्त्रियां, सबके पीछे पुरुष वर्ग। पड़ोसके चिंचोली गांवसे ये लोग चले आ रहे थे। बड़ी तरतीबसे सब लोग मंडपमें बैठे। सामने पांच-पांच अेकके पीछे अेक, पचीसकी कतारमें, अपना-अपना चरखा लिये स्त्रियां अुस पल्लवाच्छादित मंडपमें कातने बैठ गअीं। गोदमें पूनियोंका गुच्छ, माथेका पल्ला कंधे पर पड़ा हुआ, कपाल और नासिका पर कुछ पसीनेकी बूंदें, दाहिने हाथसे आठ कमलदल घूम रहा है और बायेंसे सूत्रगंगा बह कर निकल रही है — अटूट और समान, सहज और सुंदर! निःशब्द! तख्त परसे दिखायी दे रहा था कि चक्र अेक साथ घूम रहे हैं। बीच-बीचमें तकुअे पर लपेटनेके लिअे हाथ रुकता है, चक्रका वह अेक क्षणके लिअे रुकना, और पुनः घूमना करीब दो ढाअी घंटेसे अधिक चलता रहा। हर चरखेके पास विनोबाजी हो आये। अुन चरखोंमें केवल तकुआ ही लोहेका था। विनोबाजीने कहा: "देखो, अितने चरखे चल रहे हैं, किन्तु आवाज बिलकुल नहीं। और सूतका टूटना और फेंकना भी नहीं। जहां टूटा कि वह जुड़ना ही चाहिये। और सभी कत्तिनों पर अपने सूतका कपड़ा।"

हर बहनके पाससे सूक्ष्म निरीक्षण करते हुअे विनोबाजी गुजर रहे थे। पहिले कुछ देर अुनके साथ खुद कात चुके थे; पुनः कातने बैठ गये। मदालसाबहन पूनी बनाने बैठ गयीं। कअी स्त्रियोंने आकर पूनी बनाना भी देखा। अुनकी बड़ी भारी समस्या हल होती दिखाअी दी, क्योंकि धुनियेकी पूनीसे अुन्हें कातना पड़ता था। मदालसाबहनकी सूझ और कल्पनाके कारण अुसी वक्त गांवके लुहार और बढ़अीसे कुछ सलाअी पटरियां भी तैयार करवा कर मंगवाअी गयीं। कातनेवालोंने अिस कामका दर्शन और शिक्षण भी पाया।

पर केवल स्त्रियोंको कातते देखकर विनोबा खामोश कैसे रह सकते थे। अुनमें भी रंगरेजकी स्त्रियां नहीं कातती थीं। अुनमें कातनेका निषेध है। "जो कोअी कपड़ा पहिनता है, अुसे कातना चाहिये। बढ़अी या लुहारकी तरह कातनेवालोंकी जाति नहीं होती। हर घरमें जैसे रसोअी, वैसे ही हर घरमें कताअी होनी चाहिये। और स्त्री-पुरुष सबको कातना चाहिये। स्त्रियां कपड़ा पहिनती हैं, तो क्या पुरुष नंगे रहते हैं? बच्चोंको, बूढ़ोंको, स्त्री-पुरुष सबको कातना चाहिये। गांधीजी रोज कातते थे, जिस दिन प्रार्थनामें अुनका खून हुआ अुस दिन भी, प्रार्थनामें आनेसे पहिले, वे कात चूके थे।" अुन्होंने सारी जिन्दगी कातकर हमारे सामने अेक आदर्श रख दिया है।

जो बात कपड़ेके लिअे कही, वही दूसरे अुद्योगोंके बारेमें भी कही: "तेल गांवमें, गुड़ गांवमें, आटा घर घर, अिस तरह काम होगा तो राज्य आपका होगा। अिसीको ग्रामराज्य कहते हैं। और जब आपसमें कोअी लड़ेगा नहीं, सब अेक-दूसरेसे प्यार करना लगेंगे, सब अेक-दूसरेका साथ देंगे और सहकार करेंगे, तो यही ग्रामराज्य रामराज्यमें परिणत हो जायगा। ग्रामराज्य और रामराज्य अभी कायम करना बाकी है। अुसके लिअे लड़ना होगा। वह बड़ी भारी लड़ाअी होगी। आज तककी लड़ाअी जैसे अहिंसक थी वैसे यह भी होगी तो अहिंसक ही। पर वह टलनेवाली नहीं। आप भाअी-बहन अुसके सिपाही होंगे। औजार होंगे ये चरखे और हल। बम और तोपोंकी हमें जरूरत नहीं। जरूरत होगी काम करनेके औजारोंकी।"

जाहिर है कि विनोबा कांचन-मुक्ति, स्वावलंबन और साम्ययोगकी तरफ अिशारा कर रहे थे। परंधामका प्रयोग और सामने आजका 'सुदर्शन' शक्तिका दिव्य दर्शन! आगामी संघर्षकी भविष्यवाणी विनोबाके मुखसे निकल पड़ी। वे चाहते हैं कि यह संघर्ष न हो। परंतु शहरवालोंने अगर अपना रवैया नहीं बदला, ग्रामोद्योगको संरक्षण नहीं मिला, ग्राम स्वावलंबी नहीं बने, तो संघर्ष अनिवार्य ही है। अिस सारे विचार-मंथनमें परंधामका प्रयोग हमेशा अुनके मनमें रहता है। बल्कि परंधाममें जो काम चल रहा है, अुसके अनुसंधानसे ही अुनकी यह यात्रा चल रही है, अैसा कहा जाय तो अधिक यथार्थ होगा।

पन्द्रहवां मुकाम

[ता० २२-३-'५१: निर्मल: सात मील]

गोपाल पेठसे निर्मल आते हुअे बीचमें चिंचोली गांव पड़ता है। कल अिस गांवके बहुतसे लोग गोपाल पेठ आये थे। सवेरे

www.vinoba.in

पांच बजे प्रार्थना करके विनोबाजी गोपाल पेठसे चले। सवेरेकी प्रार्थनामें अकसर हम साथी लोग ही रहते हैं और दस-पांच स्थानीय कार्यकर्ता। लेकिन गोपाल पेठके सभी नर-नारी सवेरेकी प्रार्थनामें भी अुपस्थित थे। रातको अुन्होंने विनोबाको सुंदर भजन भी सुनाये थे। अुन सबसे बिदा लेकर आध घंटेमें चिंचोली पहुंचे। सूरज निकलनेमें अभी देर थी। रातका समय था। सामने देखा तो साठ छोटी-बड़ी बहिनें हाथमें निरांजन लिये फकीरके स्वागतके लिअे चली आ रही हैं। अुनके पीछे गांववाले भक्तिभावसे जयजयकार करते हुअे चल रहे हैं। अरुणोदयके पहिले अिस प्रेमोदयको देखकर हम सब गदगद हो गये। ज्ञानदेवने कहा है: "दीपीं दीप मेळी पाजळूं हो जगीं"—आओ, हम अपनी ज्ञानज्योत जलाअें और फिर संसारभरमें घर-घर ज्ञान-दीप प्रज्वलित करें। अुन्होंने अपनी दृष्टिसे सर्वोदयका ही चित्र चित्रित किया था। विनोबा दो मिनटके लिअे रुक गये: "आपके प्रेमके लिअे मैं आभारी हूं।" आप सबसे यही कहना है कि आप जैसे भक्तिभावसे अीश्वरका भजन करते हैं, वैसे ही अीश्वरका काम भी करते रहें और आपसमें सब लोग खूब प्रेमपूर्वक रहें। मैं यह तकली कात रहा हूं, यह प्रेमका धागा है। आअिये और आप सब अिस प्रेम-सूत्रमें बंध जाअिये। मैं आप सबको प्रणाम करता हूं। अब मुझे अगले मुकाम जाने दीजिये। हमने मानो आसमानकी तारिकाओंको ही अिस पृथ्वी पर देख लिया था। पांव अुस जगह कुछ और रुकना चाहते थे। परंतु विनोबाकी दो पांवकी गाड़ी बिना रुके तेजीसे आगे बढ गयी। सवेरे दिन निकलते-निकलते हम निर्मल पहुंच गये।

निर्मल यानी शहरकी बस्ती। प्रार्थना-सभामें अिर्द-गिर्दके देहातके लोग तो थे ही, शहरके प्रतिष्ठित व्यापारी तथा अन्य शिक्षित लोग भी थे। ध्यानपूर्वक अेक अेक शब्द अुन्होंने सुना। विनोबा शहरवालोंको सावधान कर रहे थे। अगर विदेशी व्यापारके आक्रमणसे शहरवाले अपनेको नहीं बचावेंगे और ग्रामोद्योगोंको रक्षण नहीं देंगे तो अिधर वे विदेशियोंसे लुट जावेंगे, अुधर गांव अुजड़ने लगेंगे और गांववाले शहरियों पर आक्रमण करेंगे। शहरियोंकी कैसी दुर्दशा होगी? अुनका यह भाषण महत्त्वका रहा*।

प्रार्थनाके बाद महत्त्वपूर्ण चर्चाअें हुअीं। रियासतमें अंग्रेजीके बढ़ते हुअे प्रभावसे कुछ लोग घबड़ाये-से नजर आये। अेक कार्यकर्ताने कहा: "यह १५ साल तक अंग्रेजीको कायम रखा, अिसलिअे दिन-ब-दिन अुसकी प्रतिष्ठा बढ़ रही है। अुलटा ही हो रहा है। मदरसेमें अंग्रेजी, अदालतोंमें अंग्रेजी। जो अंग्रेजी न जाने वह गंवार। स्वराज्यमें तो अैसा नहीं सोचा था।" विनोबाने मुस्कराकर कहा: "अरे भाअी, मोटर जाती है तो पीछे कुछ धूल छोड़ जाती है। अंग्रेज गये पर अंग्रेजी अभी बाकी है। अुसे १५ साल तक बाकी नहीं रखना है। अुसके पहिले ही अुसे खतम करना है। जिन लोगोंको हिन्दी नहीं आती और जो हिन्दी सिख भी नहीं सकते, अैसे वृद्धोंको सेवासे निवृत्ति भी मिल जायेगी।"

प्रश्नकर्ता: लेकिन कचहरियोंमें अब तक अुर्दू थी। अब अंग्रेजी क्यों?

विनोबा: बड़ोदामें तो पहले गुजराती थी। अब स्वराज्य आया तो प्रगति हुअी। गुजरातीकी जगह अंग्रेजी आयी।

अेक भाअी: हमारा खयाल है अभी कुछ दिन तो अुर्दू रहनी चाहिये।

विनोबा: लेकिन बड़ोदामें भी तो गुजराती रखी जा सकती थी। वहां गुजराती रखनेमें क्या हर्ज था? यहां तो अुर्दूके खिलाफ कुछ वातावरण भी था, पर बड़ोदामें तो वैसा भी नहीं था। लेकिन वहां आखिर गुजराती नहीं रह सकी। वैसे मैं न तो अंग्रेजी रखनेके पक्षमें हूं, न अुर्दूको मिटानेके पक्षमें हूं। परंतु बात अैसी है कि आमके पेड़ लगाये गये, अुनमें फल आने लगे, पर बंदरोंसे तकलीफ भी होने लगी। कवेलू टूटने लगे। तो वह भी सहन करना होगा।

प्रश्नकर्ता: लेकिन हम कबेलुके बदले टीन भी तो लगा सकते हैं। सभी लोग खिलखिला अुठे।

प्रश्नकर्ता: हमारा दुर्भाग्य तो यह है कि कांग्रेसके सर्क्युलर भी अब अंग्रेजीमें आने लगे हैं जो पहिले अुर्दू या तेलगूमें आते थे। हम तो अुन्हें पढ़ भी नहीं सकते।

विनोबा: वे सरक्युलर आवे तब अुन्हें कचरेकी टोकरीमें फेंक दीजिये।

प्रश्नकर्ता: लेकिन कार्यसमितिकी सभाओंमें भी ये लोग अंग्रेजीमें बोलते हैं, वहां अुनका मुंह कैसे बंद करें?

विनोबाने गंभीरताको विनोदमें परिवर्तन करते हुअे कहा: "अैसा है कि आप लोगोंको स्वराज्य सबके आखिरमें मिला, अिसलिअे आराम भी सबके आखिरमें मिलेगा।"

प्रश्नकर्ता: लेकिन वकीलोंको आज बड़ी तकलीफ हो रही है।

विनोबा: अच्छा है लोंगोको तकलीफ कम होगी। लेकिन फिर हैदराबादकी अुर्दूके बारेमें कहा: "यहां अुर्दूके लिअे काफी अच्छा क्षेत्र था। पर अिन लोगोंने अैसी भाषा बना दी कि दिल्लीवाले भी न समझ सकें। अगर वे आसान अुर्दू बनाते तो हिन्दुस्तानके सामने अेक मिसाल पेश करते। लेकिन जिनके हाथमें अुर्दूको शकल देनेका काम था, अुन्होंने अुसमें अरबीके शब्दोंकी भरमार क दी। फारसीका सहारा लेते तो भी हर्ज नहीं था।

प्रश्नकर्ता: लेकिन आज तो बहुत तकलीफ हो रही है।

विनोबा: अैसा है कि आज हमारे यहां नृसिंहावतार चल रहा है। अुधर कूर्म, वराह सब पशुके अवतार। अिधर रामकृष्ण मनुष्यावतार। पर बीचमें नृसिंहावतार हुआ। वैसे ही अुधर गुलामी गयी, पर अिधर पूर्ण स्वराज्यका अुदय नहीं हुआ है। परंतु प्रह्लाद नृसिंहावतारसे डरता नहीं। हर राज्यक्रांतिके बाद अैसी समस्याअें रहती ही हैं। यहां अैसी कोअी समस्या नहीं निर्माण हुअी, जो दूसरे देशोंमें न हुअी हो। हमारे यहां शरणार्थियोंकी समस्या जरूर अैसी हुअी, जिसकी कोअी मिसाल नहीं है।

हैदराबादवालोंके लिअे विनोबाका अेक और सुझाव था। हैदराबादमें तेलगू, कन्नड़, मराठी, हिन्दी, अुर्दू, संस्कृत सभी भाषाअें चलती हैं। मराठी-हिन्दी-संस्कृत तो नागरीमें लिखी जाती ही हैं। विनोबाने सुझाया कि तेलगू और कन्नड़ तथा अुर्दू भी नागरीमें लिखी जायें। "मुझे मालूम है कि लिपियोंकी भिन्नताके कारण भाषा सिखनेमें कितनी तकलीफ होती है। युरोपमें सभी भाषाअें रोमन लिपिमें लिखी जाती हैं, अिसलिअे पंद्रह-पंद्रह रोजमें वहांकी भाषाअें सीखी जा सकती हैं।"

"लेकिन फिर अेक ही अुच्चारणके अिन अलग-अलग वर्णोंका क्या होगा? नुक्तोंको कैसे दिखायेंगे? ज़ोय, ज़्वाद, ज़ेका फर्क कैसे बतावेंगे?"

विनोबा: "तुर्किस्तानने जहां अरबी खतम करके रोमन शुरू की वहां क्या अुन्होंने हर नुक्तेको कायम रखा है? अुन्होंने अुच्चारणके अनुसार वर्णोंकी व्यवस्था की ह। ज़ाकिरमें 'ज़' है, मजबूतमें 'ज़' है। दोनोंके अुच्चारणमें क्या फर्क है? और आखिर ये नुक्ते भी जानेवाले हैं। 'राम गरीब निवास' में 'ग' का नुक्ता कहां बाकी रहा है?"

प्रश्न: नुक्तोंके अभावमें शब्द अशुद्ध नहीं बन जायंगे?

विनोबा: "हां, पंडित लोग अशुद्ध कहेंगे, परंतु भाषा जो लोग बोलते हैं वह है या पंडित बोलते हैं वह? मराठीमें मदरसेको 'शाळा' कहते हैं। किसान 'शालेत गेला' कहता है तो मराठी जाननेवाले

* जो पिछले अंकमें छप चुका है।

www.vinoba.in

हंसते हैं। वास्तवमें शाला ही शुद्ध है। 'पुष्कल' शुद्ध है परंतु मराठीवाले 'पुष्कळ' को शुद्ध समझते हैं 'पुष्कल' पर हंसते हैं। यह आपका गांव निर्मल है या निर्मळ? कौन तय करे?"

"लेकिन भाषाशुद्धिके बावजूद शिक्षित और अशिक्षितका भेद तो रहेगा ही।"

"वह भेद ही तो हमें मिटाना है। और फिर 'प्रयोगशरणाः वैयाकरणाः।' अिसलिअे हम तो प्रयोगके शरण हैं। लोग जो प्रयोग करेंगे, अुसे हम मानेंगे। अिनका कहना है कि हम व्याकरण बनावेंगे और लोगों पर लादेंगे। यह कैसे हो सकता है? और आखिर संस्कृतके लिअे तो नागरी सीखनी ही होती है। तो तीनों भाषाअें नागरीमें ही लिखिये।"

प्रश्नः लेकिन तेलगूका छोटा 'अे' और 'ओ' को कैसे लिखेंगे?

विनोबाः अुसके लिअे हमने आसान युक्ति निकाली है। 'अे' की मात्राको अुलटा कर देनेसे छोटा 'अे', और छोटा 'ओ' हो जाते हैं। अिससे नया टाअिप नहीं बनाना पड़ेगा।

प्रश्नः नागका अुच्चारण तेलगूवाले 'नागा' करते हैं। लिखते तो 'नाग' ही हैं। नागरीमें अिसे कैसे लिखियेगा?

विनोबाः स्पेलिंगमें हम फर्क नहीं करेंगे। 'नाग' को अकारांत ही लिखेंगे। अंग्रेजीमें भी वही चलता है — जैसे क्रेयॉन....

अिस संबंधमें और भी बहुत दिलचस्प चर्चा हुअी। आम जनतामें प्रचलित पुस्तकोंको नागरीमें छपवानेकी कल्पना भी विनोबाने दी थी। नागरीके सूत्रमें देशको बांधनेका यह अेक दर्शन है। हैदराबादके लिअे ही नहीं, यह सुझाव देशकी सभी भाषाओंके लिअे अुपयुक्त है।

चर्चा चल ही रही थी कि अेक हरिजन भाअी अुठ खड़ा हुआ और हाथ जोड़कर कुछ कहने लगा। लोगोंने चाहा कि वह बीचमें न बोले। परंतु विनोबाने लोगोंको रोका। अुस भाअीको अपने पास बुलाकर गादी पर बैठा लिया और पूछाः "कहो क्या कहना है?" अुससे तेलगूमें ही पूछा।

"महाराज, अन्न नहीं, कपड़ा नहीं।"

विनोबाने फिर पूछाः "तुम्हें अकेलेको या सबको?"

"कुछको है, बहुतोंको नहीं है।"

"तुम क्या काम करते हो?"

मालूम हुआ कि वह अपना चमड़ेका काम छोड़कर मजदूरीका काम करता है।

"तुम्हारे लिअे आजके भाषणमें हमने काफी कहा है। तुम्हें अपना अुद्योग करना चाहिये और अिन लोगोंको चाहिये कि तुम्हारे अुद्योगकी अुन्नतिमें तुम्हारी मदद करें।"

लेकिन अिस चर्चामें से अनाजके रूपमें मजदूरी देनेकी चर्चा निकल पड़ी। कुछ काश्तकार भी अुपस्थित थे। सरकारी नौकर भी थे। काश्तकारोंको यह कल्पना पसंद आयी। अिसीमें से लगान अनाजमें वसूल करनेकी चर्चा भी निकली। अिस पर सरकारी नुमाअिंदोंने कहाः "अिससे सरकारकी तकलीफ बढ़ेगी।"

विनोबाने कहाः अगर जनताको आराम मिलता हो तो सरकारकी थोड़ी तकलीफ बढ़नेकी चिंता नहीं करनी चाहिये। अगर लोग अंग्रेजोंके जमानेमें जैसे दुःखी थे वैसे ही आज स्वराजमें दुःखी रहेंगे, तो अैसे स्वराजके लिअे लड़नेकी अुन्हें प्रेरणा और अिच्छा क्यों होगी?

अेक भाअीने कहाः लेकिन गल्ला अगर दो-तीन साल तक जमा रखा जाय तो खराब होनेकी संभावना रहती है।

विनोबाः दो साल तक अनाज रह सकता है, रहना चाहिये। लेकिन हमारे देशमें अनाज अितना है भी कहां कि दो साल तक अुसे संभाल रखनेकी चिन्ता करनी पड़े।

शिक्षक लोगोंने अनाजमें वेतनका कुछ हिस्सा लेनेकी कल्पना सुझाअी। अेक भाअीने कहाः "अनाजमें मजदूरी देनेकी बात न सिर्फ देहातोंके लिअे, बल्कि शहरोंके लिअे भी होनी चाहिये। हम सबकी रक्षा अिसीसे होगी।"

दा० मूं०

विद्यार्थियोंसे प्रार्थना

राजस्थान हरिजनसेवक संघ, भीलवाड़ाके मंत्री श्री भवरलालजी लिखते हैं:

"यह बात सर्वविदित है कि हरिजनोंकी पिछड़ी और गिरी हुअी हालतका बहुत बड़ा कारण अिन लोगोंका अज्ञान और अशिक्षा है। और अिसीके परिणामस्वरूप अिनमें कअी प्रकारकी बुराअियां और कुरीतियां घर किये हुअे हैं। और ये तभी दूर हो सकती हैं, जब अिनकी आर्थिक अवस्थाके सुधारके प्रयत्नोंके साथ अिनमें शिक्षा और साक्षरताका भी प्रसार किया जाय। अिसी मन्तव्य और दृष्टिकोणसे राजस्थान हरिजनसेवक संघने देशके नव निर्माणमें रुचि और दिलचस्पी रखनेवाले अुत्साही और सेवाभावी अध्यापकों और विद्यार्थी बंधुओंके लिअे गर्मीकी छुट्टियोंमें अपने अवकाशका अुपयोग समाज-सेवामें करनेकी दृष्टिसे अेक कार्यक्रम बनाया है, जिसकी रूपरेखा अिस प्रकार है:

(१) गर्मीकी छुट्टियोंमें जहां पर भी अध्यापक और विद्यार्थी बंधु रहें, वहां पर अपने समयको व्यर्थमें न गंवाकर दिनमें या रातमें जब भी समय और अवकाश हो अपने आसपासके अशिक्षित और पिछड़े हुअे प्रौढ़ों अथवा बालकोंको अिकट्ठे कर पाठशाला लगायें और नियमित रूपसे निर्धारित समय और स्थान पर अक्षरज्ञान देनेकी कोशिश करें।

(२) सफाअीसे रहने, दवादारू देने, अपने घरों और मोहल्लोंको सफाअीसे रखने, शराब आदि नशीली चीजोंका अुपयोग नहीं करने तथा आपसमें लड़ाअी-झगड़ा न बढ़ानेकी तालीम दें। साक्षरताके साथ-साथ जीवनकी सार्थकताका भी पाठ पढ़ावें।

(३) अच्छे गानों और गीतोंके जरिये राष्ट्रीय भावों और विचारोंका विकास करनेका प्रयत्न करें। समय और सुविधा हो तो शामके वक्त बच्चों और रात्रिके वक्त प्रौढ़ोंके लिअे खेलकूद और मनोरंजनके कार्यक्रम रखें।

अिसके लिअे अपने आसपासके सम्पन्न और शिक्षित समुदायसे जो भी सहयोग और सहायता मिल सके लेनेकी कोशिश करें।"

राजपूतानेके विद्यार्थी और अध्यापकगण अिस प्रार्थनाको मंजूर करेंगे और गर्मीके दिन अिस तरह हरिजन-सेवामें लगायेंगे। अैसे कामोंमें चारित्र्यको बनानेवाली सच्ची तालीम देनेकी शक्ति भरी है, यह न भूलें। अैसी सेवा भी तो अेक बड़ा शिक्षण है।

अहमदाबाद, २७-४-'५१ मगनभाअी देसाअी

विषय-सूची

		पृष्ठ
ठक्कर बापा स्मारककी अपील	कि० घ० मशरूवाला	८९
ठक्कर बापा स्मारक निधि	पुरुषोत्तमदास टंडन आदि	९०
शराब और थकान	चं० राजगोपालाचार्य	९१
आजके जमानेकी मांग —आर्थिक समानता	ठाकुरदास बंग	९१
आय और संपत्ति	कि० घ० मशरूवाला	९२
आर्थिक समानता	सीताराम	९३
श्री मणिलाल गांधीके पास आये संदेश		९३
विनोबाकी पैदल यात्रा —७	दा० मूं०	९४
विद्यार्थियोंसे प्रार्थना	मगनभाअी देसाअी	९६
टिप्पणियां:		
आमकी गुठली	कि० घ० म०	९०
पंचविध कार्यक्रममें पंडित नेहरूका हिस्सा	कि० घ० म०	९२

www.vinoba.in